Total Pages : 4 Roll No. .....

MASL-202

गद्य एवं पद्य काव्य

एम. ए. संस्कृत (एमएएसएल- 12/16/17)

द्वितीय वर्ष, सत्र 2019

Time : 3 Hours] **Max. Marks : 80**

नोट : यह प्रश्नपत्र अस्सी (80) अंकों का है जो दो (02) खण्डों क तथा ख में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड में दिए गए विस्तृत निर्देशों के अनुसार ही प्रश्नों को हल करना है।

खण्ड-क

(दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'क' में पाँच (05) दीर्घ उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए पन्द्रह (15) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल तीन (03) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (15×3=45)

1. निम्नलिखित श्लोकों में से किन्हीं दो की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) जातं वंशे भुवनविदिते पुष्करावर्त्तकानां

जानामि त्वां प्रकृति पुरुषं कामरूपं मधोनः।

तेनार्थित्वंत्वयि विधि वशाद् दूखन्धुर्मतोऽहं

याच्ञा योधा वरमधिगुणे नाधमे न्यब्धकामा।।

(ख) उत्पश्यामि द्रुतमपि सखे मत्प्रियार्थं यियासोः

कालक्षेयं कुकुम सुरभौ पर्वते पर्वते ते।

शुक्लापांगैः सजलनयनैः स्वागती कृत्य केकाः,

प्रत्युधातः कथमपि भवान् गन्तुमाशु व्यवस्येत्।।

(ग) पत्रश्यामा दिनकर हयस्यपर्धिनो यत्र वाहाः।

शैलोदग्रास्त्वमिव करिणो दृष्टिमन्तः प्रभेदात्।

योधाग्रण्यः प्रतिदशमुखं संयुगेतस्थिवांसः

प्रत्यादिष्टाभरणरूचयस्चन्द्रहासव्रणाङ्कैः।।

2. निम्नांकित गद्यांश में से किसी एक की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए:

(क) "महात्मन्! क्वाधुना विक्रमराज्यम्? वीरविक्रमस्य तु भारतभुवं विरहय्य गतस्य वर्षाणां सप्तदशशतकानि व्यतीतानि। क्वाधुना मन्दिरे-मन्दिरे जय-जय ध्वनि? क्व स्मप्रति तीर्थे-तीर्थे घण्टानादः? क्वाद्यापि मठे-मठे वेदघोषः? अधहिवेदा विच्छिद्य वीथिषु विक्षिप्यन्ते, धर्मशास्त्राण्युद्धयधूमध्वजेषु ध्मायन्ते, पुराणानि पिष्ट्वा पानीयेषु पात्यन्ते, भाष्याणि भ्रंशयित्वा भ्राष्ट्रेषु भज्यन्ति। क्वचिन्यन्दिराणि भिद्यन्ते, क्वचित्तुवयसीवनानि छिद्यन्ते क्वचिद्रदारा अपहियन्ते, क्वचिद्धनानि युण्ठयन्ते, क्वचिदार्न्तनादाः क्वचिद्रूधिरधाराः क्वचिदग्निदाहः, क्वचिद्गृहनिपातः" इत्येव श्रुतयेऽवलोक्यते च परितः।

(ख) भारतवर्षीयायूयम्, तत्रापि महोच्चव्युलजाताः, अस्ति चेदं भारतवर्षम् भवति च स्वाभविक एवानुरागः र्स्वस्यापि स्वदेशे, पवित्रतमश्च थौष्माव्यीणः सनातनो धर्मः तमेते जाल्याः सयूलमुचिछन्दन्ति अस्ति च "प्राणायान्तु नच धर्मः" इत्यार्चाणां दृढः सिद्धान्तः महान्तो हि धर्मस्य कृते व्युण्ठ्यन्ते, पात्यन्ते, हन्यन्तेः न धर्मं व्यजन्ति किन्तु धर्मस्य रक्षायै सर्वसुखान्ययि व्यक्त्वा, निशीथेष्वपि, वर्षास्वपि, ग्रीष्यधर्मेष्वयि, महारण्येष्वपि, कन्दरिकन्दरेष्वपि, व्यालवृन्देष्वपि, सिंह-संधेष्वपि, वारण-वारेष्वपि, चन्द्रहास चमत्कारेष्वपि चनिर्मया विचरन्ति। तद् धन्याः स्थ यूयं वस्तुत आर्यवंशीयाः वस्तुतश्च भारतवर्षीयः।

3. 'उपमा कालिदासस्य' के आलोक में पूर्वमेघ की समीक्षा सप्रमाण कीजिए।

4. शिवराजविजय के आलोक में छत्रपति शिवाजी की वीरता पर एक निबन्ध लिखिए।

5. पूर्वमेघ में वर्णित यक्ष के विरह जनित भावों को सप्रमाण प्रस्तुत कीजिए।

खण्ड-ख

(लघु उत्तरों वाले प्रश्न)

नोट : खण्ड 'ख' में आठ (08) लघु उत्तरों वाले प्रश्न दिये गये हैं, प्रत्येक प्रश्न के लिए सात (07) अंक निर्धारित हैं। शिक्षार्थियों को इनमें से केवल पाँच (05) प्रश्नों के उत्तर देने हैं। (5×7=35)

1. "कण्ठाश्लेष प्रणयिनिकिं पुनईरसंस्ये" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

2. कवि कालिदास की रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए मेघदूतं का वैशिष्ट्य बताइए।

3. "प्राप्ते मित्रे भवति विमुखः किं पूनर्यस्तयोच्चैः" सूक्ति की ससन्दर्भ व्याख्या कीजिए।

4. "मध्ये श्यामः स्तन इव भुवः शेष विस्तार पाण्डुः" सूक्ति के आधार पर आम्रकूट पर्वत के सौन्दर्य का वर्णन कीजिए।

5. शिवराज विजय के आलोक में मुगल आक्रान्ताओं के अत्याचारों का वर्णन कीजिए।

6. शिवराज विजय उपन्यासव्या वैशिष्ट्य सप्रमाण वर्णन कीजिए।

7. शिवराज विजय के काव्यशिल्प का वर्णन करते हुए पं. अम्बिकादत्त व्यास का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

8. शिवराज विजय के आलोक में तत्कालीन समाज दशा पर एक निबन्ध लिखिए।